

---

# Shri Ganesha Panchachamara Stotram 1

श्रीगणेशपञ्चचामरस्तोत्रम् १

## Document Information

---

Text title : Ganesha Panchachamara Stotram 1

File name : gaNeshapanchachAmarastotram.itx

Category : ganesha, stotra

Location : doc\_ganesha

Author : umApatisharmadvivedi

Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

Latest update : September 02, 2004

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 10, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Ganesha Panchachamara Stotram 1

---

## श्रीगणेशपञ्चयामरस्तोत्रम् १

---



श्रीगणेशाय नमः ।

ललाट-पट्टलुङ्घितामलेन्दु-रोचिरुदृढते  
वृताति-वर्चस्वरोत्सररत्किरीट-तेजसि ।  
हृटाहृटहृटस्फुरत्क्षणाभयेन भोगिनां  
शिवाद्भुतः शिवाद्भुमाश्रयच्छिशौ रतिर्मम ॥ १ ॥

अदभ्र-विभ्रम-भ्रमद्-भुजाभुजङ्गकृत्की-  
र्निजाद्भुमानिनीषतो निशम्य नन्दिनः पितुः ।  
त्रसात्सुसङ्कुचन्तमम्बिका-कुचान्तरं यथा  
विशन्तमद्य भालयन्द्रभालभालकं भजे ॥ २ ॥

विनादिनन्दिने सविभ्रमं पराभ्रमन्भुभ-  
स्वमातृवेष्टिमागतां स्तनं निरीक्ष्य सम्भ्रमात् ।  
भुजङ्ग-शङ्कया परेत्यपित्र्यमद्भुमागतं  
ततोऽपि शेषहृत्कृतैः कृतातिथीकृतं नमः ॥ ३ ॥

विजृम्भमाणनन्दि-धोरघोषा-धुर्धुर्ध्वनि-  
प्रडास-भासिताशमम्बिका-समृद्धि-वर्धिनम् ।  
उदित्वर-प्रसुत्वर-क्षरत्तर-प्रभाभर-  
प्रभातभानु-भास्वरं भवस्वसम्भवं भजे ॥ ४ ॥

अलङ्गुलीत-यामरामरी जनातिवीजन-  
प्रवातलोवि-तालकं नवेन्दुभालभालकम् ।  
विलोलदुल्लललललाम-शुण्डण्ड-मण्डितं  
सतुण्ड-मुण्डमालि-वङ्कतुण्डमीड्यमाश्रये ॥ ५ ॥

प्रकुल्ल-मौलिमात्य-मल्लिकामरन्त-लेलिछा  
मिलन् निलिन्त-माण्डलीच्छलेन यं स्तवीत्यमम् ।  
त्रयीसमस्तवार्णमालिका शरीरिणीव तं

सुतं भलेशितुर्मतङ्गजाननं भजाम्यहम् ॥ ६ ॥

प्रयत्न-विघ्न-भाण्डनैः प्रबोधने सद्योद्धरः  
समर्द्धि-सिद्धिसाधनाविधा-विधानबन्धुरः ।  
सबन्धुरस्तु मे विभूतये विभूतिपाण्डुरः  
पुरस्सरः सुरावलेर्मुभानुकारिसिन्धुरः ॥ ७ ॥

अराल-शैलबालिका-ऽलकान्तकान्त-चन्द्रमो-  
जकान्तिसौध-माधयन् मनोऽनुराधयन् गुरोः ।  
सुसाध्य-साधवं धियां धनानि साधयन्नय-  
नशेषलेभनायको विनायको मुद्देऽस्तु नः ॥ ८ ॥


रसाङ्गयुङ्ग-नवेन्दु-वत्सरे शुभे गणेशितु-  
स्तिथौ गणेशपञ्चयामरं व्यधादुमापतिः ।  
पतिः कविप्रजस्य यः पठेत् प्रतिप्रभातकं  
स पूर्णकामनो भवेद्विभानन-प्रसादभाङ् ॥ ९ ॥

छात्रत्वे वसता काश्यां विडितेयं यतः स्तुतिः ।  
ततश्छात्रैरधीतेयं वैदुष्यं वर्द्धयेद्धिया ॥ १० ॥


॥ इति श्रीकविपत्युपनामक-उमापतिशर्मद्विवेदि-विरचितं  
गणेशपञ्चयामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com

---

——  
*Shri Ganesha Panchachamara Stotram 1*

pdf was typeset on May 10, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

